स्नातक (प्रतिष्ठा), खण्ड-II, (NON-HINDI)

प्रस्तुतकत्री-डॉ.गायत्री सिंह (अतिथि प्राध्यापिका)

हिन्दी-विभाग, आर. डी. एस. कॉलेज, मुज़फ्फरपुर।

रामवृक्ष बेनीपुरी रचित 'सुभान खाँ' शीर्षक पाठ की समीक्षा-

'सुभान खाँ' रामवृक्ष बेनीपुरी का एक महत्वपूर्ण रेखाचित्र है। जिसमें उन्होंने एक ईमानदार, अमनपसंद, भाईचारें, साम्प्रदायिक सौहार्द, मानवतावादी,कर्मठ आदि गुणों से सम्पन चरित्र के चित्र को सुभान खाँ के रूप में उकेरा है।

सुभान खाँ एक राजमिस्त्री हैं और वे पाँचों वक़्त का नमाज पढ़ते हैं। लेकिन न तो नवाज उनके काम में बाधा डालती है और न ही काम उनकी इबादत में। कितना अपूर्व संयोग है। वे एक राजमिस्त्री है, घर बनाते हैं, मंदिर का निर्माण करते हैं और मस्जिद बनाने का ख्वाब पालते हैं। वे एक सच्चे इंसान होकर हिंदुओं के पर्व-त्योहार में शामिल होते हैं और हज करने की इच्छा भी रखते हैं। समय बदलती पटरियों पर पैंतरा बदलता है, सुभान दादा के ख्वाब पूरे होते हैं। वे हज कर आते हैं और उनके ही निर्देश में मस्जिद का निर्माण भी होता है।इतना ही नहीं, उद्घाटन के दिन हिन्दू और मुसलमान को बिना किसी भेदभाव के आमंत्रित करते हैं तथा सभी के स्वागत में खड़े रहते है। यह है सुभान

दादा के विचार की विराटता, हृदय की उदारता, जिसके भीतर सांप्रदायिक सदभावना के साथ जातीय- संस्कृति का भाव देखा जाता है।

सुभान दादा के लिए कर्म और अल्लाह समान रूप से पूज्य हैं। वे काम में अल्लाह और अल्लाह में काम के प्रति प्रेरणा पाते हैं। अपनी गोद और गोद से कंधे पर चढ़ाकर वे बच्चों के साथ खेलते हैं। वात्सल्य की मूर्ति सुभान दादा जब लौटते हैं तब लेखक के लिए छुहारा लाना भूलते नहीं।

कहा जाता है कि आदमी संकीर्णता के दायरे से ऊपर उठ जाता है, तो उसके सामने हिंदू और मुसलमान का अभाव नहीं रहता है। वह ऊपर उठकर एक सच्चा इंसान कहलाने लगता है। उन्होंने यह भी बताया है कि वात्सल्य, स्नेह और प्रेम मानव की सबसे बड़ी उपलब्धि है। यही कारण है कि सुभान खाँ मुसलमान होकर भी लेखक के लिए अर्थात एक हिन्दू के लिए दादा हो जाते हैं। सुभान खाँ से सुभान दादा होने में उनकी उच्च भावना का हाथ है। वात्सल्य की मूर्ति दादा एक सच्चे इंसान है। आत्मीयता अपना विस्तार करके मानवता का पद प्राप्त करती है-यही तो सुभान खाँ की तस्वीर है।

बेनीपुरी जी ने यह भी स्पष्ट किया है कि इंसान को बांटनेवाली हवा पहले शहरों में चलती है। इतिहास इस बात का साक्षी है कि हिंदू-मुसलमान के बीच फैलने वाले मजहबी रोग पहले शहरों में हुआ करते हैं। शहरों से होता हुआ यह संक्रामक रोग फिर देहात को अपने चपेट में ले लेता है। कहना न होगा कि अपने को सर्वाधिक सुसंस्कृत और

विकसित कहने वाले लोगों ने ही इस आपसी अंतराल को बढ़ाया है और उसके बाद यह एक बीमारी की तरह

देहातो में भी उतर आता है

बेनीपुरी जी ने दंगों के मूल कारणों पर भी प्रकाश डाला है उन्होंने इस बात का खुलासा किया है कि हिन्दू और मुसलमानों के बीच होने वाले दंगों का मूल कारण पंडित और मौलाना हुआ करते हैं। धार्मिक दुकान चलानेवाले मठाधीशों की बदनीयती का नतीजा है दंगा।

इस तरह कहा जा सकता है कि 'सुभान खाँ' के माध्यम से रामवृक्ष बेनीपुरी ने हमारी धार्मिक, सांस्कृतिक और सामाजिक समस्याओं को प्रस्तुत किया है यह आज और अधिक प्रासंगिक हो गया है।जब कभी क़ब्रिस्तान की धूल और पीपल की पतियाँ टकराएँगी तब सुभान खाँ याद आएँगे।